LIBRARY

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE, BHOPAL

S.No.-4 (JANUARY 2024)

पत्रिका (पत्रका प्लस) Page – 02 19/01/2024

#TempleMatters जनजातीय संग्रहालय में 'भारत में मंदिर के मायने' पर लोकरुचि संवाद

मंदिर और भक्ति के माध्यम से ही हम ज्ञान की विरासत को लेकर बढ़ रहे हैं : प्रो. त्रिवेदी

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. आज जब अयोध्या में राम पधार रहे हैं, हर तरफ उत्सव का माहौल है, ऐसे में कुछ लोग ये सवाल उठा देते हैं कि मंदिर क्यों? अस्पताल बनाने चाहिए, स्कूल खोलने चाहिए...। इन मुद्दों को उठाने वाले उन तमाम लोगों को अपने सवालों का जवाब तब मिल गया, जब गुरुवार शाम प्रो. अल्पना त्रिवेदी ने अपनी बात रखी। बता दें कि गुरुवार शाम जनजातीय संग्रहालय में दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान द्वारा थिंक इंडिया के संयोजन से लोकरुचि संवाद का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'भारत में मंदिर के मायने' था। इसमें बतौर मुख्य वक्ता भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला की फैलो प्रो. अल्पना त्रिवेदी मौजूद थीं। यहां उन्होंने प्रेजेंटेशन के माध्यम से ऐसे कई तथ्य उजागर किए कि श्रोता विभिन्न मौकों पर तालियां बजाने से खुद को नहीं रोक पाए।

मंदिर हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़

अध्यक्षता कर रहे स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशक प्रो. कैलाश राव ने कहा कि संपूर्ण भारत के मंदिरों में बने द्वारपाल इतने शक्तिमान संपन्न बनाए जाते हैं कि उनसे अंदर बैठे भगवान की शक्ति का आभास हो जाता है। भारत के शहर-गांव मंदिरों में ही बसते हैं। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में राजा के महल की बजाय मंदिर भव्य और विशाल बनाए जाते थे। कोई भी नागरिक देव स्थान को भूमि देने में संकोच नहीं करता था। मंदिर हमारे आर्थिक संस्थान के रूप में संचालित थे, जहां से कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं लौटता था। ये हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं। मंदिरों में सारे उत्सव- त्योहार मनाए जाते थे और हर मंदिर में आवश्यक रूप से अन्न क्षेत्र होता था। आज भी अनेक मंदिर इसके उदाहरण हैं। बता दें कि इस कार्यक्रम का संचालन दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा ने किया। आभार प्रदर्शन थिंक इंडिया के संयोजक निर्विकल्प शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में नगर के अनेक प्रबुद्धजनों के साथ मैनिट, एनएलआईयू, एसपीए, आईसर आदि संस्थाओं के छात्र भी सम्मिलित हुए।

पर्यावरण की दृष्टि से मंदिरों का विशेष महत्व

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास ने मध्यप्रदेश में मंदिरों के विकास पर प्रकाश डाला। शैलकला चित्रों से लेकर आधुनिक मंदिरों का उल्लेख करते हुए उन्होंने देव मूर्तियों के विकास परंपरा की चर्चा की और बताया कि भारत में पत्थर का पहला मंदिर सांची में बनाया गया था। डॉ. व्यास ने कहा कि भारत में पर्यावरण की दृष्टि से मंदिरों का विशेष महत्व है। अधिकांश मंदिरों के द्वार पर गंगा-जमुना की मूर्तियां इसका प्रमाण हैं।

मंदिरों से कला, साहित्य, संगीत विकसित हुए

भारत में मंदिरों के विकास पर प्रो. अल्पना त्रिवेदी ने कहा कि भारत में मंदिरों का विकास स्वत: स्फूर्त भावना से हुआ। यहां पर मंदिर- धर्म, विद्या, व्यापार और राजनीति का केंद्र रहे हैं। मंदिरों से ही भारत में सामुदायिकता, बहुलता, समावेशिकता का विकास हुआ। भारत में मंदिर मानव-जीवन का केंद्र रहे हैं। वे अन्न-क्षेत्र के साथ-साथ सेवा के भी प्रमुख केंद्र रहे हैं। मंदिर ही मानव के समस्त संस्कारों की धुरी हैं, जिसका संबंध जन्म से लेकर मृत्यु संस्कारों तक जुड़ा है। उन्होंने कहा कि मंदिरों के अलावा भारत में सम्पूर्ण तीर्थ केंद्रों से भारत एकता के सूत्र में बंधा हुआ है। प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि भारत में मंदिरों से कला, संगीत, साहित्य, नृत्य आदि विकसित हुए। दरअसल भारत मंदिरों के माध्यम से ही कर्मभूमि के रूप में जाना जाता है। हम इनके माध्यम से इतिहास रच रहे थे।